* भूमिका *

: भूमिका :

आधुनिक युग के प्रगतिशील समीक्षक और प्रतिभासंपन्न उपन्यासकार एवं अत्यंत विवादास्पद व्यक्ति डॉ.देवेश ठाकुर का नाम उपन्यास विधा में आता है। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई हैं। प्रगतिचेता उपन्यासकार और समीक्षक डॉ.देवेश ठाकुरजी अपनी निश्चित दृष्टि और अपनी राष्ट्रवादिता के लिए विख्यात हैं। उन्हें बचपन में अर्थाभाव के कारण संघर्ष करना पड़ा जिसके कारण अपने उपन्यासों का कथ्य मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण बनाया है। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण इन्होंने अपने लेखन में सर्वहारा वर्ग का पक्षधर होना पसंद किया है। इन्होंने अपने हर एक उपन्यास में नया शिल्प प्रयोग प्रस्तुत किया है। डॉ. देवेशजीने अपने उपन्यास साहित्य में महानगरों का कोना- कोना छान मारा है। उनकी कृतियों में हर एक पृष्ठ पर जिज्ञासा का एक अटूट सिलसिला रहता है, जो उपन्यास के खत्म होने तक टूट नहीं पाता। समीक्षा क्षेत्र के साथ-साथ कृति लेखन भी इन्होंने अपने निश्चित प्रगतिशील और वस्तुपरक दृष्टि के कारण एक ओर अनेक विद्वानों की रूष्टता को आमन्त्रित किया है, तो दूसरी ओर ख्यातिप्राप्त विद्वानों में प्रशंसा भी अर्जित की है। देवेशजी, स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य के एक सशक्त लेखक हैं।

प्रेरणा :-

मैं जब एम.ए.भाग दो में पढ़ रहा था, उस समय मेरे प्यारे दोस्त सुनीलकुमार बनसोडेजी का एम्.फिल.के लिए शोध कार्य चल रहा था। उनका एम्.फिल का विषय देवेश ठाकुर कृत "प्रिय शबनम" एक अनुशीलन था। इसी कारण मुझे "प्रिय शबनम " और "काँचघर" जैसे उपन्यास पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस उपन्यास में विभिन्न वर्गों के लोगों में प्रेमी, पति-पत्नी, वेश्या, पत्रकार, अधिकारी, अध्यापक, लेखक, कवि, तस्कर, नवधनिक आदि अनेक पात्रों द्वारा समाज की अनेक समस्याओं

का, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, तथा घटियापन का पर्दाफाश कर बेनकाब कर दिया हैं। यह यथार्थ चित्रण पढ़कर मैंने निश्चय किया कि एम.फिल. के लिए मैं डॉ.देवेशजी के उपन्यास पर ही शोध कार्य करूगाँ। डॉ.देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" इस शीर्षक के लिए श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.पी.एस्.पाटीलजी ने स्वीकृती दे दी और मेरा शोध कार्य प्रारंभ हुआ।

डॉ.देवशे ठाकुर के साहित्य पर अनेक शोध कर्ताओं ने मौलिक कार्य किया है :-

(अ) पीएच.डी. :-

१. "देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य"
डॉ.पांडुरंग पाटील (शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर १९९२)

२. "हिन्दी उपन्यासों में प्रयोगधर्मिता : देवेश ठाकुर के विशेष सन्दर्भ में "
कुमारी कमल चौरसिया (डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर,१९९२)

३. "देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व - एक अनुशीलन"
आत्माराम नारायण दामिलकर (नागपुर विश्वविद्यालय,१९९३)

(ब) एम.ए. तथा एम.फिल :-

१. देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य
कु.गीता डानियल (नागपुर विश्वाविद्यालय,१९८५)

२. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ - एक अनुशीलन
प्रा.नंदकुमार रामचंद्र रानभरे (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर,१९९०)

३. देवेश ठाकुर के उपन्यास : मध्यवर्ग की समस्याओं का संन्दर्भ :

"जनगाथा" के विशेष सन्दर्भ में

वेदना जैन (आगरा विश्वविद्यालय, १९९०)

४. उपन्यासकार देवेश ठाकुर :

कु. संगीता व्यास (उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, १९९०-९१)

५. देवेश ठाकुर के "भ्रमभंग" उपन्यास का अनुशीलन

सौ. माधवी संजय बागी (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, १९९५)

६. देवेश ठाकुर के "प्रिय शबनम" उपन्यास का अनुशीलन :

सुनिलकुमार बापूराव बनसोडे (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, १९९५)

७. देवेश ठाकुर के "इसलिए" उपन्यास का अनुशीलन

शिरगांवकर (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, १९९४)

८. देवेश ठाकुर के "अपना अपना आकाश" उपन्यास का अनुशीलन

कु. गीता शंकरराव भोसले (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, १९९५)

"जनगाथा" की समस्याओं पर स्वतंत्र रूप में शोधकार्य संपन्न नहीं हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध-प्राबन्ध में "जनगाथा" उपन्यास मे चित्रित समस्याओं को उजागर करने का एक प्रयास मात्र है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रारम्भ में कुछ सवाल मेरे मन में थे -

१. संरचनात्मक नवीनता की दृष्टि से "जनगाथा" का महत्व क्या है ?
२. "जनगाथा" के पात्र किस वर्ग के हैं ?
३. "जनगाथा" में कौन-कौन सी समस्याएँ उजागर हो चुकी है ?
४. क्या "जनगाथा" शीर्षक सार्थक कहा जा सकता है ?
५. क्या "जनगाथा" में शकुन की कथा को ही चित्रित करने का उद्देश्य रहा है ?

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध निम्नांकित अध्यायों में विभाजितहै -

प्रथम अध्याय : "देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इस अध्याय में मैने डॉ.देवेश ठाकुरजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, आरंभिक जीवन के अभाव, शिक्षा, विवाह, साहित्य का निर्माण तथा उनके संघर्षशील, स्पष्टवादी दृढनिश्चयी, अध्यवसायी और महत्वकांक्षी व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है,जिसका प्रतिबिम्ब उनकी रचनाओं में प्राप्त होता है। कृतित्व के अन्तर्गत देवेश ठाकुर लिखित विविधमुखी साहित्य का सिर्फ नामोल्लेख करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षेप में परिचय दिया हैं।

द्वितीय अध्याय : "देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन"

"जनगाथा" डॉ.देवेश ठाकुर के अन्य उपन्यासों की भाँति नया शिल्प प्रयोग प्रस्तुत करता है। उपन्यास की प्रमुख कथा के साथ कई अन्य प्रासंगिक कथाएँ और घटनाएँ जुड़ी हुओ हैं। कथानक का आरम्भ लेखक शिवनाथ की स्मृतिजन्य व्यथा-कथा से होता है और अन्त भी उसी की निराशजन्य पीड़ा से। इसमें न नायक है न नायिका इस दृष्टि से यह नया प्रयोग हैं। प्रस्तुत उपन्यास मिश्रित शैली में लिखा हुआ हैं। तथा अन्त में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय : "देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास के पात्र तथा चरित्र-चित्रण"

"जनगाथा" में लेखकने पात्रों का चरित्र-चित्रण करने में बड़ी सफलता पायी है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक की साली शकुन, पत्रकार जोशी और लेखक शिवनाथ का चरित्र सफलता से प्रस्तुत किया हैं। लेखक ने ज्यादा पत्रकार जोशी के चरित्र-चित्रण

पर ध्यान दिया है। जोशी एक प्रतिभा संपन्न पत्रकार, मुँहफट, वर्तमान राजनीति तथा राजनीतिज्ञों पर करारा व्यंग्य करनेवाला, बाजारू साहित्य लिखनेवालों की धज्जियाँ उड़ानेवाला, मध्य वर्ग का प्रतिनिधि, ईमानदार, जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण रखनेवाला, सच्चा दोस्त आदि है। शकुन सेवाभावी, संघर्षशील व्यक्तित्ववाली, तर्कनिपुर्ण, अभावों से भरी जिन्दगीवाली, आदर्श अध्यापिका, सपने बुननेवाली, संस्कारशील युवती है। प्रो.शिवनाथ प्रतिभासंपन्न लेखक, सच्चा दोस्त, आदर्श अध्यापक, ईमानदार व्यक्ति है। प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भरमार होते हुए भी डॉ.देवेश ठाकुर ने हर एक पात्र पर लक्ष केंन्द्रित किया है। बड़े दुष्कर कार्य को भी उन्होंने बड़ी आसानी से पूरा किया है। तथा उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली है।

चतुर्थ अध्याय : "जनगाथा" में चित्रित समस्याएँ"

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, साहित्यिक महानगरीय आदि महत्वपूर्ण समस्याओं पर लेखक ने सफलता से प्रहार किया है तथा इस उपन्यास में अन्य समस्याओं की अपेक्षा राजनीतिक समस्या पर ज्यादा ध्यान दिया है। राजनेता और भ्रष्टाचार, साहित्य और राजनीति, कांग्रेसी नेता, साम्यवादी नेता, भ्रष्टाचार और पुलिस, व्यवस्था का विरोध, स्वास्थ्य विभाग, जनतंत्र अभिव्यक्ति की आजादी और प्रेस, चुनाव समस्या तथा भाषा समस्या आदि राजनीतिक समस्या का पर्दाफाश किया है।

उपसंहार : इस प्रकार "देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" इस शीर्षक पर अनुसंधान करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में संक्षिप्त में देने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या परोक्ष सहायता करनेवाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रध्देय गुरूजनों, परिवार सदस्यों, तथा आत्मिय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के निर्देशक गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटीलजी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर तथा अध्यक्ष,हिन्दी अध्ययन मंडल, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। श्रद्धेय गुरूदेव पाटीलजी सदा अपने काम में व्यस्त रहने के बावजूद भी स्नेहपूर्ण आशिर्वाद के साथ मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन करते रहे। विषय चयन से लेकर, अब तक उचित परमार्श देते रहें। आपके, प्रतिभाशाली व्यक्तिमत्व और विद्वत्तापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए मौलिक परमार्श के द्वारा पथ-प्रदर्शन किया है। आपने स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन देकर मेरा उत्साह बढ़ाया उसके लिए मैं आपका चिरऋणी हूँ। गुरूदेव के ऋण से उऋण हो पाना असंभव है। डॉ.पाटीलजी की विद्वत्ता, अपार पाण्डित्य, अथक परिश्रम करनेवाली वृत्ति के प्रति हार्दिक श्रद्धा प्रकट करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीवार्द मेरे साथ रहेगा। गुरूवर्य. डॉ.पाटीलजी की धर्म पत्नी सिन्धुदेवीजी का प्रोत्साहन तथा आशीर्वाद मेरे उत्साहवर्धन में सहायक सिद्ध हुआ है। उनके प्रति -हदय से आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

शोधकार्य-काल में मुझे देवेशजी से मिलने का मौका मिला तो उन्होंने मेरी आशंकाओं का निर्सन बड़ी सफलता से किया और मेरे कार्य में मेरा उत्साह बढ़ाने का भी कार्य किया। इस सहायता के लिए श्रद्धेय ठाकुरजी का मैं -हदय से आभारी हूँ।

हिन्दी के भूतपूर्व अध्यक्ष, आदरणीय गुरूवर्य डॉ.वसंत मोरेजी जिनकी प्रेरणा

के बिना यह कार्य संभव नहीं हो सकता। तथा इस मौलिक कार्य में उनका आशिर्वाद मेरे साथ रहा है। उनके उपकार से उऋण होना मेरे लिए संभव नही हैं। डॉ.अर्जुन चव्हाणजी, अधिव्याख्याता, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से मुझे समय-समय पर उचित परमार्श एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, अतः मैं उनका भी ऋणी हूँ। प्रा.माधवी जाधवजी तथा प्रा.पोतदारजी के आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ हैं। उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताश्री तथा माताजी की स्नेहमयी ममता सदैव मेरे साथ रही है। पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। अतः मैं उनके ऋणमें सदैव रहूँगा। मेरे आदरणीय बड़े भैय्या प्रकाश लोंढेजी के आशीर्वाद के बिना इस लघु-शोध-प्रबन्ध की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तथा मेरी भाभी सुषमाजी ने भी इस कार्य में मेरा उत्साह बढ़ाया है। इसलिए मैं बड़े भैय्या तथा भाभी के प्रति -हदय से कृतज्ञ हूँ। साथही मेरी प्यारी बहना रंजना, शारदा तथा छोटी बहना सत्यभामा ने भी इस मौलिक कार्य में मुझे प्रेम तथा सक्रिय सहयोग दिया है। इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

मित्रवर सुनील बनसोडे, आण्णासो कांबळे, प्रताप पाटील, अनिल साळुंखे, अप्पा गिड्डे, अरूण गंभिरे,तानाजी पाटील, कु.गीता भोसले , सुचिता पाटील, सुजाता किल्लेदार, शारदा राऊत आदिने मुझे अपने इस मौलिक कार्य में डटे रहने के लिए स्नेह एवं सद्भावनापूर्ण सुझाव देकर अपनी सच्ची मित्रता को सिद्ध किया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। तुकाराम शिंदे, तानाजी लोंढे एवं बंडू कांबळे ने भी इस लघु-शोध-प्रबन्ध में गिलहरी जैसा अपना सहयोग दिया है। इसलिए मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

इस शोध कार्य का टंकन करनेवाले ऐश्वर्या झेरॉक्स और टायपिंग सेंटर,कोल्हापूर का मैं -हदय से आभार प्रकट करता हूँ। बॅ.खर्डेकर ग्रंथालय के सभी सहयोगियों को

हार्दिक सहयोग के लिए मैं आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही प्रस्तुत लघु-शोध-प्रब को पूर्ण करने में जिनसे भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। भविष्य में भी इन सभी लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबंध अवलोकन के लिए प्रस्तुत करता हूँ।

श्री रामचन्द्र मारूती लोंढे
(शोध-छात्र)